SAMVAD E-JOURNAL
ISSN (Online) :2583-8334
(International Peer-Reviewed Refereed Journal) Volume 3, Issue-5, Oct-Nov-Dec : 2025
Published by Rangmati Publication https://www.rangmatipublication.com

राष्ट्र-निर्माण में हिन्दी साहित्य का योगदान

प्रवीण हांडा

❖ भूमिका

किसी राष्ट्र का निर्माण केवल भौगोलिक सीमाओं, राजनीतिक सत्ता या आर्थिक ढांचे से नहीं होता, बल्कि उसकी वास्तविक नींव सांस्कृतिक चेतना, भाषिक एकता, ऐतिहासिक बोध और साहित्यिक अभिव्यक्ति में निहित होती है। भारत जैसे बहुभाषी देश में साहित्य ने सदैव राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में केंद्रीय भूमिका निभाई है। हिन्दी भाषा ने पूरे राष्ट्र की एकता बनाई रखने में भी बहुत बड़ा योगदान दिया है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास को राष्ट्रवादी दृष्टि से प्रस्तुत करने का श्रेय आचार्य रामचंद्र शुक्ल को जाता है। उनका ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' न केवल साहित्यककालों का क्रमबद्ध विवरण है, बल्कि भारतीय समाज और राष्ट्रीय चेतना के विकास का भी दर्पण है।

शुक्लजी का मानना था कि साहित्य वही श्रेष्ठ है जो समाज के जीवन मूल्यों को उजागर करे और मानव को नैतिक और बौद्धिक रूप से उन्नत बनाए। यही दृष्टि उनके इतिहास लेखन में भी प्रतिबिम्बित होती है, जहां वे प्रत्येक युग का मूल्यांकन सामाजिक और राष्ट्रीय संदर्भों में करते है ।

1. आदिकाल : वीरता और राष्ट्रीय अस्मिता का बीज :-

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य के आदिकाल को वीरगाथा काल के रूप में परिभाषित किया । इस काल का साहित्य मुख्यतः वीरता, शौर्य, स्वाभिमान और बलिदान की भावना से ओत प्रोत है। पृथ्वीराज रासो जैसे ग्रंथों में विदेशी आक्रमणकारियों के विरुद्ध संघर्ष का वर्णन मिलता है ।

"बीसलदेव के समय में वर्तमान किशनगढ़ राज्य तक मुसलमानों की सेना चढ़ आई जिसे परास्त कर बीसलदेव आर्याव्रत से मुसलमानों को निकालने के लिए उत्तर की ओर बढ़ा । उसने दिल्ली और झांसी के प्रदेश अपने राज्य में मिलाए और आर्यव्रत के एक बड़े भू-भाग से मुसलमानों को निकाल दिया"[१]

आदिकाल में वीर रस से भरा एक और रासो काव्य परमाल रासो (आल्हा खंड) है। यह रासो जगनिक द्वारा लिखा है। इसमें महोबे के दो वीर आल्हा और ऊदल के वीरचरित का वर्णन वीर गीतात्मक काव्य के रूप में लिखा था, जो सर्वप्रिय हुआ ।

"जगनिक के काव्य का आज कहीं पता नहीं है पर उसके आधार पर प्रचलित गीत हिन्दी भाषाभाषी प्रांतों के गांव गांव में सुनाई पड़ते है । ये गीत आल्हा के नाम से प्रसिद्ध है और बरसात में गाए जाते है । गांवो में जाकर देखिए तो मेघगर्जन के बीच में किसी अल्हैत के ढोल के गंभीर घोष के साथ यह वीर हुंकार सुनाई देगी -

"बारह बरिस लै कूकर जाएं, औ तेरह लै जिए सियार।
बरस अठारह क्षत्रिय जिए,आगे जीवन को धिक्कार।।"[२]

यह राष्ट्र निर्माण के प्रारंभिक बीज जनता में स्वाभिमान और आत्मगौरव की भावना उत्पन्न करता है, जो किसी भी राष्ट्र की नींव होती है ।

2. मध्यकाल : सामाजिक एकता और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद :-

भक्तिकाल को श्यामसुंदरदास ने हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग कहा है। यह काल राष्ट्र निर्माण की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। कबीर, रैदास और गुरु नानक जैसे संतों ने सामाजिक कुरीतियां, धार्मिक पाखंड और वर्गभेद का विरोध किया - 'जात न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान'। भारतीय समाज में समानता और मानवता की भावना को सुदृढ़ करती है। यह सामाजिक समरसता राष्ट्र-निर्माण की मूल शर्त है।

तुलसीदास, सूरदास और मीरा ने राम और कृष्ण को लोकनायक के रूप में प्रस्तुत किया । रामचरितमानस केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि भारतीय जीवन मूल्यों, मर्यादा, करुणा और कर्तव्य बोध का महाकाव्य है। राम का आदर्श चरित्र एक राष्ट्रनायक के रूप में उभरता है । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने इतिहास ग्रंथ कहा है -

"तुलसी राम के सगुण भक्त थे, लेकिन उनकी भक्ति में लोकोन्मुखता थी । वे राम के अनन्य भक्त थे । राम ही उनकी कविता के विषय थे । नाना काव्य रूपों में उन्होंने राम का ही गुणगान किया है, किन्तु उनके राम परब्रह्म होते हुए भी मनुज है और अपने देशकाल के आदर्शों से निर्मित है । तुलसी के राम ब्रह्म भी है और मानव भी ।"[३]

"राम को 'गरीब निवाज' और 'पेट की आग को बुझाने वाला' कहा है । इसलिए उन्होंने दरिद्रता को जगत का सबसे पीड़ादायी दुख कहा"[४]

"तुलसीदास ने तत्कालीन सामंतों की लोलुपता पर प्रहार किया है । प्रजा द्रोही शासक तुलसी की रचनाओं में प्रायः उनके कोपभाजन बनते है । 'जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी । सो नृप अवसि नरक अधिकारी' । उन्होंने अकाल, महामारी के साथ साथ प्रजा से अधिक कर वसूलने की भी निंदा की है । अपने समय की विभिन्न धार्मिक साधनाओं के पाखंड का भी उन्होंने उद्घाटन किया है ।"[५]

तुलसीदास ने राम के बारे में लिखते लिखते राष्ट्र निर्माण का भी ध्यान रखा है जो समाज में गलत हो रहा था उस पर करारा प्रहार भी किया है ।राष्ट्र निर्माण में सूरदास ने कृष्ण के विषय में मार्मिक बातों का वर्णन करके लोगों के हृदय में भावनाएं जगाए रखने का कार्य किया गया है ।

3. आधुनिक काल : हिन्दी साहित्य और प्रत्यक्ष राष्ट्र निर्माण :-

आधुनिक काल में हिन्दी साहित्य और राष्ट्र-निर्माण का संबंध सर्वाधिक स्पष्ट और सशक्त रूप में सामने आता है आचार्य रामचंद्र शुक्ल इस काल को राष्ट्रीय चेतना का युग माना जाता है ।

आधुनिक काल के प्रथम चरण में भारतेंदु हरिश्चंद्र का आविर्भाव होता है । उनको आधुनिक हिन्दी साहित्य का जनक कहा जाता है । उनके साहित्य में विदेशी शासन का विरोध, भारतीय संस्कृति का गौरव और सामाजिक सुधार की चेतना का स्वर देखने को मिलता है ।

"स्वयं बाबू हरिश्चन्द्र को हिन्दी भाषा और नागरी अक्षरों की उपयोगिता समझने के लिए बहुत से नगरों में व्याख्यान देने के लिए जान पड़ता था । उन्होंने इस संबंध में कई पैम्फलैट भी लिख । हिन्दी प्रचार के लिए बलिया में बड़ी भारी सभा हुई थी, जिसमे भारतेंदु का बड़ा मार्मिक व्याख्यान हुआ था । वे जहां जाते अपना यह मूल मंत्र अवश्य सुनाते थे -

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।

बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल ।।"[६]

इस प्रकार भारतेंदु हरिश्चंद्र निज भाषा को राष्ट्र-निर्माण का मूल आधार घोषित करते है ।

"बालकृष्ण भट्ट के दोनों उपन्यास 'नूतन ब्रह्मचारी' (१८८७) और 'सो अजान एक सुजान' (१८९२) शिक्षा मूलक और सुधारवादी है । पहले में नायक विनायक डाकुओं का हृदय परिवर्तन करता है, दूसरे में सत्संग के कारण एक बिगड़े हुए सेठ का सुधार हो जाता है ।"[७]

भारतेंदु युग के बाद द्विवेदी युग में तर्कशीलता, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व पर अधिक बल दिया गया । इस युग में राष्ट्र निर्माण का सबसे बड़ा कार्य खड़ी बोली हिन्दी का मानकीकरण था । द्विवेदीजी ने सरल, शुद्ध और व्याकरण सम्मत हिन्दी पर बल दिया और जनसाधारण की भाषा को साहित्य की भाषा बनाया ।एक सशक्त राष्ट्र के लिए सुदृढ़ संपर्क भाषा अनिवार्य होती है । द्विवेदी युग ने हिन्दी को इस भूमिका के लिए तैयार किया । द्विवेदी युग का साहित्य प्रत्यक्ष रूप से राष्ट्र निर्माण की भावना से प्रेरित है । इस युग में कवियों ने पराधीनता की पीड़ा को व्यक्त किया, भारतीय संस्कृति के गौरव का स्मरण कराया और स्वराज की आकांक्षा को स्वर भी दिया ।

"गुप्तजी की कृतियों में आधुनिक युग की लोकोन्मुखता मानवीय करुणा के साथ धूल मिल गई है । उन पर गांधीवादी का प्रभाव स्पष्ट है । वे अतीत के प्रेमी है, किन्तु वर्तमान की विषमता को देखने के कतराते नहीं । सबसे बड़ी बात यह है कि वे नए विचारों का स्वागत करने में पीछे नहीं रहते । इसलिए उनका अतीत प्रेम भविष्योन्मुख है । वे लोक की महिमा प्रतिष्ठित करनेवाले रचनाकार है । साकेत के राम घोषणा करते है -

"संदेश नहीं है यहां स्वर्ग का लाया ।
इस धरती को ही स्वर्ग बनाने आया ।।"[८]

गुप्तजी कहते है -

"हम कौन थे, क्या हो गए और क्या होंगे अभी"

उपरोक्त गुप्तजी की पंक्ति समाज को आत्ममंथन और आत्मगौरव की ओर प्रेरित करती है ।

राष्ट्र निर्माण के लिए आधुनिक काल के तीसरे चरण में छायावादी और चौथे चरण में प्रगतिवादी रचनाओं ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया । जिसमें छायावाद में जयशंकर प्रसाद, निराला, महादेवी वर्मा और पंत जैसे कवियों ने व्यक्ति की आत्मा से राष्ट्र की आत्मा को स्वर दिया । प्रसाद की 'कामायनी' भारतीय संस्कृति और दर्शन का राष्ट्रीय महाकाव्य है । 'गीतिका' का प्रथम गीत 'वर दे वीणा वादिनी, वर दे' शिक्षित समाज का कंठहार बन चुका है । यह सामान्य मंगल गीत नहीं एक राष्ट्रीय गीत है । एक पंक्ति में कहा गया है । 'प्रिय स्वतंत्र रव अमृत मंत्र नव भारत में भर दे' । तत्कालीन राष्ट्रीय आंदोलन के संदर्भ में यह नया अमृत मंत्र था ।"[११]

प्रगतिवादी साहित्य ने श्रमिक किसान और शोषित वर्ग को राष्ट्र के केंद्र में रखा । यह लोकतांत्रिक राष्ट्र-निर्माण की चेतना है ।

"नागार्जुन मूलतः कवि है, पर आर्थिक आवश्यकताओं के फलस्वरूप उन्हें उपन्यास भी लिखने पड़े । 'रतिनाथ की चाची', 'बलचनामा', ' नई पौधा', 'बाबा बटेश्वरनाथ', 'वरुण के बेटे', 'दुख मोचन', 'चेहरे नए पुराने', 'उग्रतारा', 'इमारतीय' आदि उनके उपन्यास है । वे प्रेमचंद की परंपरा के उपन्यासकार है । 'रति नाथ की चाची' में विधवा की यातना चित्रित है और 'बलचलनामा' तथा 'बाबा बटेश्वरनाथ' में किसान मजदूरों का शोषण ।"[१२]

इस प्रकार नागार्जुन ने अपने युग की समस्याओं का यथार्थ चित्रण अपने साहित्य में करके समाज को जागृत करने का कार्य किया । यह एक राष्ट्र निर्माण का कार्य ही है ।

1) निष्कर्ष :

अंततः यह कह सकते है कि हिन्दी साहित्य केवल साहित्यिक प्रवृत्तियों का विवरण नहीं, बल्कि भारतीय राष्ट्र निर्माण की सांस्कृतिक गाथा है । उपरोक्त चर्चा से यह स्पष्ट होता है कि आदिकाल ने स्वाभिमान जगाया, मध्यकाल ने सामाजिक एकता और भाषा की काव्य शैली का विकास स्थापित किया और आधुनिक काल ने प्रत्यक्ष राष्ट्रीय संघर्ष को स्वर दिया इस प्रकार हिन्दी साहित्य भारत राष्ट्र की आत्मा का साहित्य है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : विश्वभारती प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ सं. – ३४
२.हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : विश्वभारती प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ सं. – ४६
३. हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास – विश्वनाथ त्रिपाठी : ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्राइवेट लिमिटेड, हिमतनगर, हैदराबाद पृष्ठ सं. – ३६
४.हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास – विश्वनाथ त्रिपाठी : ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्राइवेट लिमिटेड, हिमतनगर, हैदराबाद पृष्ठ सं. – ३७
५.हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास – विश्वनाथ त्रिपाठी : ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्राइवेट लिमिटेड, हिमतनगर, हैदराबाद पृष्ठ सं. – ३८
६. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : विश्वभारती प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ सं. – ३२४ – ३२५
७. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह, पृष्ठ सं. – ३०२
८. हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास – विश्वनाथ त्रिपाठी : ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्राइवेट लिमिटेड, हिमतनगर, हैदराबाद पृष्ठ सं. – १०५ – १०६
९. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह, पृष्ठ सं. – ३४८
१०. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह, पृष्ठ सं. – ४८२